वेदकालीन यायावरी

– अथर्ववेद (१२,१,४७) के पथिवीसूक्त में एक मन्त्र आता

है ये ते पन्थानो बहवो जनायना,
रथस्य वर्तमान सच यातवे
यै । सन्चरन्त्युमये मद्रपत्यास्तं,
पन्थानं जयेमान मित्रमतसत्करं,
यच्छिवं तेन नो मृड ।।

डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल ने इसकी व्याख्या इस प्रकार की है।

१– इस पृथ्वी पर पन्थ या मार्गो की संख्या अनेक हैं।

२– ये पन्थ जनायन अर्थात् मानवों के यातायात के प्रमुख साधन हैं।

३ –उन मार्गो पर रथों के वर्त्म या रास्ते बिछे हैं (अर्वाचीन वाहनों से पूर्व रथों के वाहन सबसे अधिक शीघ्रगामी और आढययोग्य थे)।

४–माल ढोने वाले शकटो (अनसा) के आवागमन के लिये (यातवे) भी वे ही प्रमुख साधन थे।

५– इन मार्गो पर भले – बुरे सभी को समानरुप चलने का अधिकार है।

६– किन्तु इन पथों पर शत्रु और चोर – डाकुओं का भय हटना आवश्यक हैं।

७– जो सब प्रकार से सुरक्षित और कल्याणकारी पथ है, वे पृथ्वी की सम्पन्नता के सूचक हैं ।

वैदिक साहित्य से जानकारी मिलती है कि आर्य कारवॉ बनाकर चलते थे और उनकी यात्रायें लम्बी सडको (प्रपथ) से होती थीं, जिनपर उनके रथ दौड सकते थे, अर्थवेद (१४, १, ६३, १४, २, ६–९) में उल्लेख है, कि–गाडी चलनेवाली सडकें बगल के रास्तों से उंची होती थी, इनके दोनो और पेड लगे होते थे.

ऐतरेय ब्राम्हण (७, १४) का चरैवेति मन्त्र गतिशीलता के लिये यात्रा पर जोर देता है, अर्थवेद (१२,१,४०) रास्ते के शत्रुओं को याद रखता है।

आर्यो के मूलस्थान को लेकर पाश्चात्यो ने ऐक संदिग्ध स्थिती पैदा कर रखी है ।आज के अधिकतम इतिहासज्ञ इसी मानसिकता के साथ अपना मन्तव्य प्रकट करते है कि भारतवर्ष आर्यो का मूल देशन था, अपितु वे बाहर से आये थे ।इसी क्रम मे एक नाम पाश्चात्य विद्वान श्री फुशे का है ।उनके अनुसार आर्य बलख से हिंदुकुश होते हुये भारत आये. वे कहते हैं – अफगानिस्तान के कबीले अपनी स्त्रियों, बच्चो, डेरों तथा साजसामान के साथ आगे बढते है, इसी तरह आर्य भी आगेबढे होगे ।

शतपथ ब्राम्हण में एक कथा आती है, सरस्वती नदी के किनारे वैदिक धर्म की पताका फहराते हुये अपने पुरोहित गौतम राहुगण तथा वैदिक धर्म के प्रतीक, आतीन के साथ, विदेघ माधव आगे चल पडे ।नदियों को दुखाते हुये तथा वनों को जलाते हुये वे तीनों सदानीरा (गण्डक नदी) के किनारे पुहुंचे ।कथा काल में उस नदी के पार वैदिक संस्कृति नही पहुंची थी, पर शतपथ (१,४,१,१०–१७) के समय, नदी के पार ब्राह्मण रहते थे तथा विदेह वैदिक संस्कृति का केंद्र बन चुका था।कथा के अनुसार, जब विदेह माधव ने अग्नि से उसका स्थान पूछा तो उसने पुर्व की ओर इशारा किया।शतपथ के समय सदानीरा कोसल और विदेह के बीच सीमा बनाती थी।

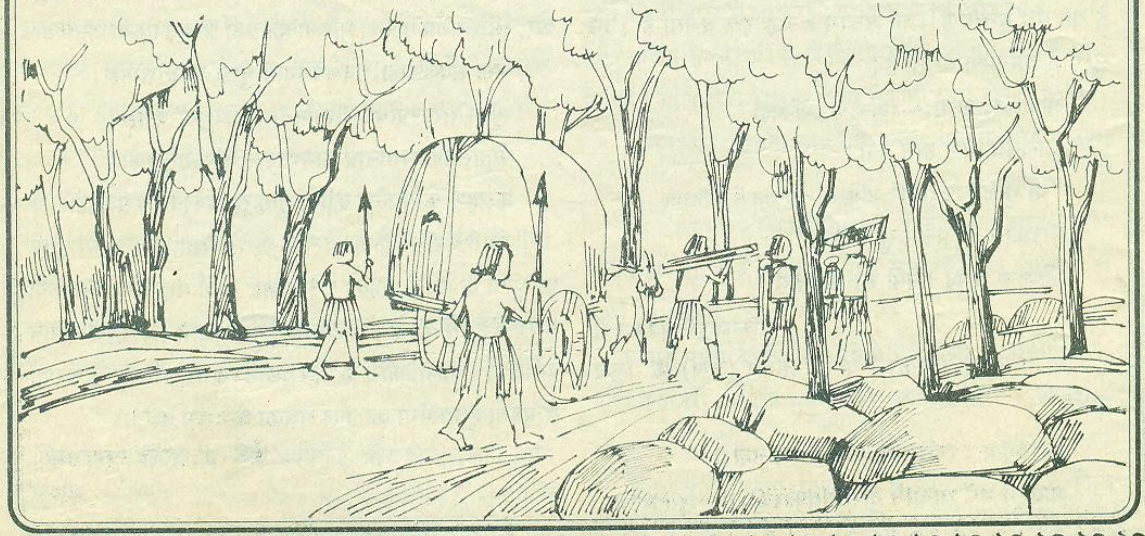

इसमें कोई सन्देह नही, की अतिथि के रुप में आनेवाला यात्री भारतीय सभ्यता में, आदरणीय माना गया है । इसलिये अतिथेय का कार्य धर्म का अंग माना गया और यह परम्परा आज भी सजीव है । किन्तु व्यापारी और यात्री अलग अलग रुप रखते है । वेदों मे अतिथी पुज्य माना गया, पर व्यापारीइस स्तर में नही आता.

वैदिक इन्डेक्स के अनुसार – पण प्रतिपण के साथ साथ अथर्ववेद (३,१५ / ४, ड) के एक सुक्त में मिलता है । यहॉ यह मोलभाव और विक्रम करने की क्रिया का द्योतक है।

पणि इस युग के घनी व्यापारी थे, किन्तु वे अपनी कृपणता के कारण ब्राम्हणों के अप्रिय बन गये थे. इस लिये ऋगवेद के अनेक मन्त्रो में उन्हे घृणित माना गया है । देवो से पणियों पर आक्रमण करने का निवेदन किया गया है।

वैदिक युग मे व्यापारी लम्बी यात्रायें करते थे, जिसका उद्देश तरह तरह से पैसा पैदा करना, फायदे के लिए पूँजी लगाना और लाभ के लिये दूर देशों मे माल भेजना था । वैदिक युग के व्यापारी तथा समुद्री मार्ग से भारत के व्यापार को जारी रखे हुये थे।

पणियों में बुब का विशेष नाम था । एक मन्त्र में उन्हे बेकनाट (सुदखोर) कहा गया है । और एक स्थान पर उन्हें 'ग्रथि'न कहा गया है डॉ. मोतीचंद्र के अनुसार, पश्चिमी हिंदी मे ग्रंथ पूंजी को कहते हैं।

पणि किसे कहते थे – यह ठीक ठीक निश्चय करना कठिन है । सेंट पीटर्सबर्ग कोश के अनुसार – यह शब्द पण् (विनिमय) धातु से व्युत्पन्न हुआ है. इस प्रकार पणि एक ऐसा व्यक्ति होता था, जो विना किसी प्रतिप्राप्ति के अपना कुछ नही देता था । लुडविग का विचार है, कि, पणियों के साथ युध्द के प्रत्यक्ष सन्दर्भो की व्याख्या यह मान लेने से होती है, की यह लोग ऐसे आदिवासी व्यवसायी होते थे, जो काफिलों मे चलते थे, जैसाकि अरब और उत्तरी अफ्रिका मे होता है।

मालूम पडता है, शायद पणि अनार्य व्यापारी थे और उनका वैदिक धर्म मे विश्वास नही था । इसीलिये आर्यो का उन पर रोष था।

वैदक युग मे सिन्ध का समुद्र के रास्ते व्यापारिक संबंध था वेदों में नाव संबंधी अनेक शब्द उपलब्ध हैं घुम्न, प्लव, अरित्र आदि आदि । इस प्रकार स्पष्ट है, कि वैदिक आर्य समुद्र – यात्रा करते थे, ऋग्वेद (१,४७,६,७,६,७) में समुद्र के रत्न मोती का व्यापार, समुद्री व्यापार के लाभ वैदिक आर्यो के समुद्र – ज्ञान के परिचायक हैं, शतपथ ब्राम्हण (१,६/३,११) अरब सागर को प्राच्यौर बंगाल की खाडी को उदिच्य कहता है, बाद में इन्हे क्रमशः रत्नाकर और महोदधि कहा जाने लगा.

ऋग्वेद में समुद्रयात्राओं का उल्लेख है, भुजयु का जहाज जब समुद्री दुर्घटना का शिकार हुआ (६,३२,२) तो उसने किनारे का पता लगाने के लिये पंक्तियों को छोडा. आगे चलकर उत्तर वैदिकयुग मे जहाजो के साथ ''दिशाकाक'' रखे जाने का उल्लेख मिलता है।

इस प्रकार हम वैदिक कालीन यायावरी, जिसमें समुद्रयात्रा विहित थी, के अनेक रुप देखते हैं। आगे चलकर सामाजिक संकीर्णता के कारण समुद्रयात्रा का निषेध किया गया. मनु ने भी समुद्रयात्रा का विरोध किया, किन्तु फिर भी बौध्द साहित्य में समुद्र यात्रा के प्रसंग सामान्यतया प्राप्त होते हैं।

प्रिं. मांगीलाल मिश्र
सिकर.